HYPOTHESIS

उपकल्पना

B.A. II Honours
Sociology
Dr. M.A. John

Limitation of Hypothesis (उपकल्पना की सीमाएं):

उपकल्पना एक ऐसी कल्पना है जो अनुसन्धान की दिशा निर्देशित करने का कार्य करते है। इसकी सत्यता की जाँच होना बाकी रहता है। जाँच के पश्चात यह सही तथा गलत दोनों में से कुछ भी सिद्ध हो सकती है। यदि इसका उपयोग सावधानी पूर्वक न किया जाये तो अध्ययन के लिये खतरा भी पैदा कर सकती है। इसकी सीमाओं की चर्चा इस प्रकार की जा सकती है।

(1) प्राकल्पना में अटूट विश्वास – कई बार अध्ययनकर्ता प्राकल्पना को अपने अध्ययन का मार्गदर्शक न मानकर उसे सिद्ध करने के क्रम में ही तथ्यों का संकलन करता है। ऐसी स्थिति में अध्ययन की वैज्ञानिकता समाप्त हो जाती है। P.V. Young के अनुसार "एक अनुसंधानकर्ता को अपनी प्राकल्पना की शुद्धता को स्थापित करने के उद्देश्य से अध्ययन का प्रारम्भ नहीं करना चाहिये"।

(2) प्राकल्पना आधारित तथ्य : प्रारम्भ में अध्ययनकर्ता उपकल्पना के आधार पर ही तथ्यों का संकलन करता है। लेकिन उसे चाहिये कि वास्तविक तथ्यों के आधार पर अपनी प्राकल्पना में संशोधन एवं परिवर्तन कर ले। ऐसा न करने पर संकलित तथ्य दोषपूर्ण एवं व्यर्थ सिद्ध होते है। इस सन्दर्भ में Fry ने लिखा है "मानव विशिष्ट प्रश्नों के सन्दर्भ में भी तथ्यों का संकलन नहीं करना चाहिये वरना एक संस्था अथवा परिस्थिति के गवेषणा में प्रश्नों को सदैव

Scanned by CamScanner

सुझाव के रूप में समझना चाहिये।

(3) विशिष्ट अभिरुचियों तथा संवेगों का प्रभाव। कई बार अनुसन्धानकर्ता अपनी किसी विशिष्ट रुचि और संवेग के कारण एक विशेष अध्ययन विषय का चुनाव करता है और उसके प्रति पक्षपात पूर्ण रवैया अपनाता है, तब उसके द्वारा किया जाने वाला अध्ययन अवैज्ञानिक हो जाता है।

(4) अध्ययन कर्ता का प्रतिष्ठा बिन्दु। कई बार अध्ययनकर्ता द्वारा अपनी बनाई हुई कल्पना को श्रेष्ठ एवं सही मान लेता है और उसके साथ अपने सम्मान को जोड़ लेता है। ऐसी स्थिति में वह प्राकल्पना के विपरीत यथार्थ तथ्यों को भी स्वीकार नहीं करना चाहता है। यह स्थिति वैज्ञानिक तथ्य तक पहुँचने में बाधक होती है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्राकल्पना के प्रयोग में विशेष सावधानी बरतनी चाहिये। तब इसके आधार पर निर्थ मार्थ अध्ययनों द्वारा वैज्ञानिक निष्कर्ष प्राप्त किया जा सकता है।

—x—

Scanned by CamScanner